न किसानों को, जिनको ओला-वृष्टि से क्षति हुई है, मुआवजा दे क्योंकि अब किसान इतना दुखी हो गया है कि अगर मुआवजा नहीं दिया गया तो भुखमरी से मौत भी हो सकती है।

(ii) REPAYMENT OF ARREARS TO SUGAR-CANE GROWERS IN UTTAR PRADESH

श्री महावीर प्रसाद (बांसगांव) : उपाध्यक्ष महोदय, मैं आप के माध्यम से केन्द्रीय सरकार का ध्यान उत्तर प्रदेश विशेषकर गोरखपुर जनपद में गन्ना किसानों के बकाये मूल्य के भुगतान के संबंध में आकर्षित करना चाहता हूं। श्रीमान्, गन्ना के मामले में उत्तर प्रदेश को पश्चिम, मध्य एवं पूर्व तीन क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। यह विभाजन कहां तक न्यायसंगत है, मैं इस विवाद में नहीं पड़ना चाहता हूं। फिर भी सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में गन्ना किसानों की जो दयनीय दशा होती जा रही है, उस का मूल कारण सही समय पर सही मूल्य न देने के कारण हो रही है। यों तो सम्पूर्ण उत्तर प्रदेश में करोड़ों रुपये आज भी गन्ना किसानों के गन्ना मिल मालिकों पर भुगतान के लिये बाकी पड़े हुए हैं, फिर भी उस पर ध्यान नहीं दिया जा रहा है। श्रीमान्, आप का ध्यान खास कर मैं अपने संसदीय निर्वाचन क्षेत्र बांसगांव में स्थित एक गन्ना मिल-मालिक के संबंध में आकर्षित करना चाहता हूं। केवल इस मिल पर क्षेत्रीय गन्ना किसानों का लगभग दो करोड़ रुपया आज भी बाकी पड़ा हुआ है। इस के कारण क्षेत्रीय किसानों की दशा अत्यन्त दयनीय होती जा रही है। फलस्वरूप क्षेत्रीय किसानों में काफी असन्तोष व्याप्त है।

अतः आप के माध्यम से पुनः केन्द्रीय सरकार का ध्यान गन्ना किसानों की रक्षा के लिये अविलम्ब उन के बकाए धन के भुगतान के लिये आकर्षित करना चाहता हूं और निवेदन करना चाहता हूं कि केन्द्रीय सरकार राज्य सरकार के ऊपर दबाव डाल कर अवशेष बकाए धन का भुगतान करावे। धन्यवाद।

(iii) NEED FOR CONSTRUCTING A NEW BUILDING FOR P. AND T. DEPARTMENT AT LAKHISARAI (BIHAR)

श्रीमती कृष्णा साही (बेगूसराय) : उपाध्यक्ष महोदय, बिहार के मुंगेर जिला के लखीसराय अनुमंडल का प्रशासनिक एवं व्यापारिक दृष्टिकोण से बहुत ही महत्व है। आबादी भी तकरीबन 80 हजार के आसपास है। यहां रेलवे का भी बहुत बड़ा जंक्शन है। गल्ले की भी बहुत बड़ी मंडी है। हजारों लोगों का प्रतिदिन आवागमन है। परन्तु संचार की सुविधा नहीं रहने के कारण अनुमंडलीय स्तर पर जितना चतुर्दिक विकास होना चाहिये, वह अवरुद्ध हो गया है। लखीसराय टेलीफोन केन्द्र 1956 में स्थापित किया गया था। टेलीफोन केन्द्र के सभी पार्ट्स-पुर्जे तब से चले आ रहे हैं जो अब बहुत ही पुराने हो गये हैं। जिन का निर्माण या तो कम कर दिया गया है या बिलकुल ही बन्द सा हो गया है। यह एक्सचेंज 200 लाइनों का हस्तचालित एक्सचेंज है, जिस में 150 फोन कार्यरत हैं और जिस में बहुत से नम्बर खराब हैं। जिन्हें ठीक नहीं किया जा सकता है। राष्ट्रीय योजना के अनुसार सभी हस्तचालित एक्सचेंज को स्वचालित करना है। अगर इसको स्वचालित किया जाए तो विभाग दोहरे खर्च से बच सकता है और साथ ही साथ व्यापारिक और प्रशासनिक दृष्टिकोण से इलाके का विकास तेजी से हो सकेगा। स्वचालित टेलीफोन पद्धति के अभाव में इस शहर का सम्बन्ध अन्य बड़े शहरों से जोड़ा